पृ प्र वि सं

रा पृ वि अ कें

गृह पत्रिका 2020

संरक्षक
डॉ. एन. पूर्णचन्द्र राव
राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र
आक्कुलम, तिरुवनन्तपुरम

संपादक मंडल

डॉ. एन. पूर्णचन्द्र राव
निदेशक - अध्यक्ष

श्री. रजत कुमार शर्मा
वैज्ञानिक सी - सदस्य

श्री. डी. पी. मारेट
वरिष्ठ प्रबन्धक – सदस्य सचिव

सुश्री अलका गोंड
वैज्ञानिक बी-सदस्य

डॉ. चन्द्र प्रकाश दूबे
वैज्ञानिक सी-रा.भा.का अधिकारी

श्रीमती. वी. एस. राजश्री
हिन्दी अनुवादक –सदस्य (अनुबंध)

टंकण कार्य
षेरीना सी
हिन्दी टंकक (अनुबंध)
संपादक
श्री. डी. पी. मारेट
वरिष्ठ प्रबन्धक

प्रकाशन
हिन्दी अनुभाग
राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
भारत सरकार
तिरुवनन्तपुरम 695011
दूरभाष : 04712442213, 2511720,721
फ़ैक्स 04712442280

रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकार के अपने हैं। कार्यालय से कोई भी संबंध नहीं हैं।

एनसेस परिसर

इस अंक में

क्रमांक	विषय	रचनाकार	पृष्ठसंख्या
1	केंद्रीय रासायनिक प्रयोगशाला	डॉ. अनूप कृष्णन के	9-13
2	हे भारत के भारत वासी (कविता)	डॉ. चंद्रप्रकाश दूबे	14
3	हिन्दी भाषा का महत्व-महापुरुषों के जुबानों से	अखिला आनंद	15
4	समाचार और कार्यक्रम		16-27
5	काश (कविता)	वी. एस. राजश्री	28
6	धरा का प्रकोप (कविता)	धन्या मोहन एस	29
7	एनसीईएसएस पृथ्वी विज्ञान मंच वार्ताएँ		30-33
8	संगठन चार्ट		34
9	सेवा निवृत्तियाँ, नियुक्तियाँ, पदोन्नतियाँ		35

नए वरिष्ठ प्रबन्धक का पदधारण

संपादकीय ......

प्रथम संस्करण के लिए सभी वर्गों के लोगों से बहुत प्रशंसा प्राप्त करने के बाद, हमें आपके समक्ष "पृथ्वी" के दूसरे संस्करण को प्रस्तुत करने पर गर्व है। इसमें संस्थान में 2018-2019 के वित्तीय वर्ष के दौरान हुई कई कार्यक्रमों को तथा एनसेस कर्मचारियों द्वारा लिखित साहित्य को भी शामिल किया है। "पृथ्वी-2" को सम्पन्न बनाने में विभागीय राजभाषा समिति सदस्यों और एनसेस हिन्दी विभाग ने काफ़ी मेहनत की है। इसके लिए मैं उनकी सराहना करना चाहूंगा। आगे भी हमारी हिन्दी गृह-पत्रिका "पृथ्वी" को ओर रंगीन बनाने की कोशिश जारी रखूँगा। "पृथ्वी" गृह पत्रिका द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार का एक छोटा-सा हिस्सा बनने में हम एनसेस परिवार बहुत खुशनुमा हैं।

जय हिन्द !! जय हिन्दी !!!

डी·पी· मोरेट

डी पी मोरेट ,वरिष्ठ प्रबन्धक ,एनसीईएसएस

विश्व हिन्दी दिवस 2019 मनाते हुए ....

संरक्षक की कलम से .....

राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र की गृह पत्रिका "पृथ्वी" का दूसरा अंक 2018 अप्रैल से 2019 मार्च तक संस्थान में हुई सभी गतिविधियों को दर्शाती है। यह हमारे संस्थान के बारे में पाठकों को अधिक जानकारी दिलाने का एक माध्यम है। एनसेस, हिन्दी के कार्यान्वयन में बहुत तेज़ी से लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है। सभी कर्मचारी सदस्य इस केलिए बड़े उत्साह के साथ कार्य कर रहे हैं।

पृथ्वी गृह पत्रिका को आगे बढ़ाने में एनसेस हिन्दी अनुभाग तथा विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति सदस्यों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। हमारी गृहपत्रिका भविष्य में राजभाषा की प्रगति के साथ-साथ हमारे अनुसंधान कार्यक्रमों को मशहूर बनाने में एक आधारशिला बन सकती है। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय तथा हमारे पाठकों की तरफ़ से पृथ्वी के पहले अंक के लिए तारीफ़ों की वर्षा हुई है। यह हमारे लिए एक सकारात्मक अनुभव है। आशा करता हूँ कि यह उत्साह सदा बना रहे। सभी को मेरी शुभकामनाएँ।।

पूर्णचंद्र राव

डॉ. एन पूर्णचन्द्र राव, निदेशक, एनसेस

केंद्रीय रासायनिक प्रयोगशाला

केन्द्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (सीसीएल)
जलविज्ञान प्रक्रिया समूह
राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र (एनसीईएसएस)

डॉ.अनूप कृष्णन. के

राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र (एनसेस), पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार, त्रिवेंद्रम का अत्याधुनिक केंद्रीय रासायनिक प्रयोगशाला अत्याधुनिक विश्लेषणात्मक उपकरणों की एक विस्तृत वर्णक्रम आवास है। प्रयोगशाला मूल रूप से तटीय, नदमुख और नदी के प्रणालियों के भौतिक रासायनिक और जैव रासायनिक पहलुओं की निगरानी के लिए डिज़ाइन और विकसित की गई है। प्रयोगशाला भौतिक रासायनिक और जैविक दृष्टिकोण के संदर्भ में जैवमंडल की गुणवत्ता का अध्ययन करने पर भी ध्यान केंद्रित करती है। इस प्रकार, अध्ययन में सामाजिक घटक शामिल होता है, जिसे समय की आवश्यकता के रूप में माना जाता है। इसके अलावा, भारी धातु / पोषक तत्व प्रदूषण, सीवेज निपटान, प्रजातीकरण और जैव संचय से संबंधित अध्ययन किए जा रहे हैं। प्रयोगशाला एक मंच में निगरानी-शमन अध्ययन की सबसे आशाजनक अवधारणा में काम करती है ।प्रयोगशाला क्षेत्र के अध्ययन और जैविक घटकों सहित प्राथमिक स्तर के पानी की गुणवत्ता के अध्ययन के लिए उपकरणों से भी सुसज्जित है। अंततः तटीय / नदी क्षेत्रों में प्रदूषण नियंत्रण में निर्णय लेने के लिए और प्रदूषण उन्मूलन रणनीतियों के संदर्भ में शुरू किए गए प्रबंधन कार्यों की प्रभावशीलता को सत्यापित करने के लिए प्रयोगशाला में उत्पन्न होने वाला प्राथमिक डेटा पर्यावरणीय प्रबंधकों के लिए उपयोगी है।

प्रयोगशाला एनसेस के अन्य समूहों के पानी / तलछट / मिट्टी से संबंधित विभिन्न अध्ययनों को भी पूरा करती है। प्रयोगशाला, भुगतान / सहयोगी आधार पर भारत में विश्वविद्यालयों, कॉलेजों, उद्योगों, स्थानीय निकायों, सरकारी एजेंसियों / प्राधिकरणों और राष्ट्रीय शैक्षणिक और अनुसंधान संस्थानों के अनुसंधान कार्यक्रमों के साथ-साथ गुणवत्ता निगरानी अध्ययन के लिए आउट-साइड नमूनों का विश्लेषण करने के लिए भी प्रतिबद्ध है।

केंद्रीय रासायनिक प्रयोगशाला में उपलब्ध विश्लेषणात्मक सुविधाएं

प्रयोगशाला में उपकरणों का एक विस्तृत वर्णक्रम होता है जो धातुओं, पोषक तत्वों, ऑर्गेनिक्स जैसे रासायनिक घटकों का विश्लेषण करने और उन्हें अलग करने में सक्षम होते हैं, विशेष रूप से कीटनाशक यहां तक कि पीपीटी स्तर तक। प्रयोगशाला में उपकरणों का एक समूह भी होता है जो क्षेत्र अध्ययन से एकत्रित तलछट / मिट्टी की सतह विशेषताओं का विश्लेषण करने में सक्षम होते हैं।

अनाज आकार विश्लेषक (सेडीग्राफ)

मेक : माइक्रोमीटर, मॉडल: सेडीग्राफ III **प्लस** 5125

एप्लिकेशन :पार्टटिकल साइज़ डिस्ट्रिबूशान (मिट्टी / तलछट)

सेडिग्राफ एक पूरी तरह से स्वचालित कण आकार विश्लेषक है और 0.1-300 माइक्रोन की सीमा पर कण आकार वितरण का निर्धारण कर सकता है। यह अवसादन और एक्स-रे अवशोषण के सिद्धांत पर काम करता है। उपकरण किसी भी पूर्व उपचार के साथ तलछट / मिट्टी का विश्लेषण करने में सक्षम है।

सतत प्रवाह विश्लेषक

मेक : स्कालर, मॉडल: सैन

एप्लिकेशन:पोषक तत्वों का विश्लेषण (फॉस्फेट, नाइट्राइट, नाइट्रेट, सिलिकेट और अमोनिया)

स्कालर सैन ++ नवीनतम पूरी तरह से स्वचालित सतत प्रवाह विश्लेषक (मूल देश: नेदरलैंड) है, जिसका उपयोग समुद्र, नदमुख, ताजा और अपशिष्ट नमूनों में पोषक तत्वों की मात्रा को मापने के लिए किया जाता है। तलछट और मिट्टी के नमूनों में पोषक तत्वों का विश्लेषण मानक तरीकों का उपयोग करके नमूनों को पचाने के बाद किया जा सकता है।

भूतल क्षेत्र विश्लेषक (पोर अभिलक्षण के साथ)

मेक: मईक्रोमेरिटिक्स, मॉडल : ट्राइस्टार- 3020kr

एप्लिकेशन :भूतल क्षेत्र और पोर अभिलक्षण

भूतल क्षेत्र विश्लेषक एक परिष्कृत वाद्य यंत्र है जिसका उपयोग N2 और CO2 जैसे विभिन्न प्रकार के गैसों के रासायनिक अधिशोषण और भौतिक अधिशोषण के माध्यम से पाउडर, ठोस और कणिकाओं के विशिष्ट सतह क्षेत्र को निर्धारित करने के लिए किया जाता है।

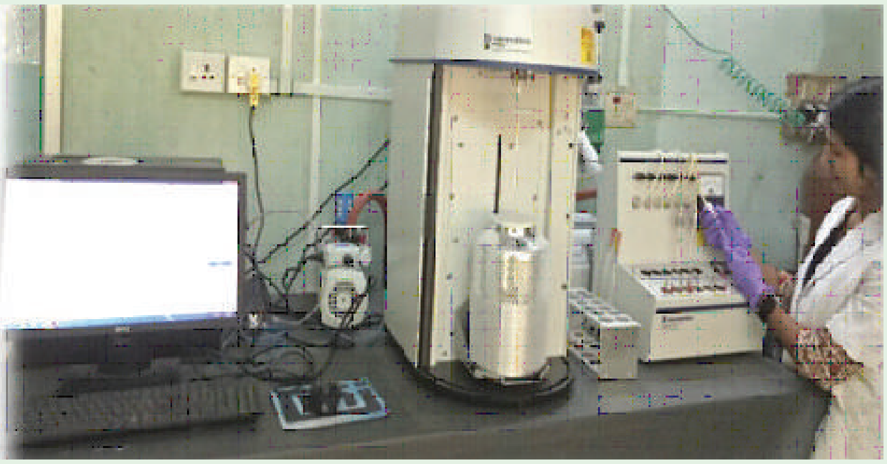

गैस क्रोमैटोग्राफी-मास स्पेक्ट्रोमेट्री (जीसी-एमएस)

मेक: थेरमो साईंटिफ़िक, मॉडल : टीएसक्यू डूओ मास स्पेक्ट्रोमीटर

गैस क्रोमैटोग्राफी-मास स्पेक्ट्रोमेट्री (जीसी – एमएस) दो अलग-अलग विश्लेषणात्मक तकनीकों का एक संयोजन है, गैस क्रोमैटोग्राफी (जीसी) और मास स्पेक्ट्रोमेट्री (एमएस) का उपयोग जटिल कार्बनिक, जैव रासायनिक मिश्रण और स्थायी गैसों का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है, कभी-कभी इसे जीसी-क्यूक्यूक्यू प्रणाली के रूप में संदर्भित किया जाता है।

तरल क्रोमैटोग्राफी-मास स्पेक्ट्रोमीटर / मास स्पेक्ट्रोमीटर (एलसी-एमएस/एमएस)

मेक: अजिलेंट टेक्नोलजीस मॉडल: 1200 इन्फ़िनिटी सीरीज़ (एलसी)& 6420(एमएस/एमएस)

तरल क्रोमैटोग्राफी-मास स्पेक्ट्रोमेट्री (एलसी-एमएस / एमएस) ऑर्गेनिक्स का विश्लेषण करने के लिए सबसे अच्छा उपकरण है विशेष रूप से प्रकृति में गैर-वाष्पशील के कीटनाशक। यह उपकरण दो अलग-अलग विश्लेषणात्मक तकनीकों, तरल क्रोमैटोग्राफी (जीसी) और मास स्पेक्ट्रोमेट्री (एमएस) का एक संयोजन है और आमतौर पर एलसी-क्यूक्यूक्यू प्रणाली के रूप में जाना जाता है।

सीसीएल, एचवाईपी में एलसी-एमएस / एमएस सुविधा

टोटल ऑरगानिक कार्बन विश्लेषक (टीओसी विश्लेषक)

टोटल ओर्गानिक कार्बन (टीओसी) पानी या मिट्टी या तलछट के दिए गए नमूने में मौजूद कार्बनिक पदार्थों के मूल्यांकन में सबसे महत्वपूर्ण मिश्रित मापदंडों में से एक है और इसमें एक द्रव्यमान के रूप में सभी कार्बन मिश्रण शामिल हैं और इसे एक पूर्ण मात्रा के संदर्भ में मापा जाता है। टोटल ओर्गानिक कार्बन (टीओसी) एक ओर्गानिक मिश्रण में पाए जाने वाले कार्बन की मात्रा है और अक्सर इसे पानी की गुणवत्ता या दवा निर्माण उपकरणों की स्वच्छता के एक गैर-विशिष्ट संकेतक के रूप में उपयोग किया जाता है।

सीसीएल, एचवाईपी में टीओसी विश्लेषक

सीएचएनएस एलिमेंटल एनालाइज़र

सीएचएनएस विश्लेषक दिए गए पानी या मिट्टी या तलछट के नमूने के कार्बन, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन और सल्फर के प्रतिशत को निर्धारित करने में उपयोगिता पाते हैं। और कार्य सिद्धांत "डुमास विधि" पर आधारित है जिसमें "फ्लैश दहन" द्वारा नमूने का पूर्ण और तात्कालिक ऑक्सीकरण शामिल है।

सीसीएल, एचवाईपी में सीएचएनएस विश्लेषक

माइक्रोवेव प्लाज़्मा - परमाणु उत्सर्जन स्पेक्ट्रोमेट्री (एमपी-एईएस)

मेक: अजिलेंट टेक्नोलजीस मॉडल-4210- एमपी -एईएस

सीसीएल, एचवाईपी में एमपी-एईएस विश्लेषक

एमपी-एईएस में एक परमाणु उत्सर्जन स्पेक्ट्रोफोटोमीटर (एईएस) के लिए एक माइक्रोवेव प्रेरित प्लाज्मा होता है।इसका उपयोग प्रमुख और छोटे तत्वों के एक साथ बहु-विश्लेषण निर्धारण के लिए किया जाता है।

मेर्कुरी विश्लेषक

मेक: पीएस एनालिटिकल मॉडल : पीएसए 10.025 मिल्लेनियम मेर्लिन

मेर्कुरी विश्लेषक अब सभी विश्लेषणात्मक प्रयोगशालाओं के लिए एक आवश्यक उपकरण हैं, मेर्कुरी जो मनुष्यों के लिए अत्यंत विषैला होता है, हमारे पूरे वातावरण में एक प्रमुख संदूषक है।

सीसीएल, एचवाईपी में मेर्कुरी विश्लेषक

गीला रासायनिक प्रयोगशाला

केंद्रीय रासायनिक प्रयोगशाला में नवीनतम सुरक्षा सुविधाओं के साथ रासायनिक स्टोर के साथ एक अच्छी तरह से बनाए रखा गीला रासायनिक प्रयोगशाला शामिल है। गीली लैब की स्थापना दो आधुनिक स्वनिर्धारित फ्यूम हुड्स, वज़न संतुलन और ग्लास की विस्तृत श्रृंखला के साथ की जाती है। गीली प्रयोगशाला विभिन्न परिवेशीय वातावरण जैसे कि खाना पकाने की गैस, नाइट्रोजन, CO2 और आर्गन गैसों का उपयोग करके विश्लेषण / प्रयोग करने में सक्षम है। रासायनिक स्टोर अच्छी तरह से सुरक्षा सुविधाओं से सुसज्जित है और गैस शोधन सुविधाओं के साथ अलग टेफ़्लोन मेड कबोर्ड्स में संग्रहित वाष्पशील रसायन हैं।

हे भारत के भारत वासी !

डॉ. चंद्रप्रकाश दूबे

हे भारत के भारत वासी, है मेरी एक विनती तुमसे,
मंदिर, मस्जिद, चर्च से तुम भगवान को बाहर निकालो,
जो रहता है कण कण में उसको बंद क्यों रखते हो घर में,
है तुम्हारा ये प्रयास विफल, वो रहता है सब के मन में,
करते हो सौदा तुम उससे, कर दो पूरी मनोकामना मेरी,
धन दौलत और दूध दही चढाऊंगा मन से,
भीख मांग कर दान देते हो जिससे लेते हो उसी से,
हे भारत के भारत वासी, है मेरी एक विनती तुमसे,
सोना चांदी और गहनों से ब्यापार करते हो तुम सबसे,
दूध दही तो गटर में जाते बेचारे गरीब जो तरसते उससे,
करो दान कुछ असहायों को, भगवान मिलेगा अपने अन्दर से,
भगवान नहीं है मूर्ति और तस्वीरों में, वो मिलेगा बस मन से,
हे भारत के भारत वासी, है मेरी एक विनती तुमसे,
भूखे प्यासे और बेघर की मदद करो जीवन को सार्थक बनाने में,
भगवान दिखेगा उनको तुममे, उन्हें गले लगाने में,
मत सोचो की तुम नहीं हो कारण भ्रस्टाचार बढ़ाने में,
देते हो योगदान तुम भूख मरी बढ़ाने में,
हे भारत के भारत वासी, है मेरी एक विनती तुमसे,
याद करो राम, कृष्णा और शंकर के संग हनुमान को,
वो भी तो थे अपने जैसे, देखते थे भगवान को अपने मन से,
तुम सब ने मान लिया उन्हें भगवान अपने मन से,
सबमे दिखेगा भगवान, करो कुछ काम उनके जैसे,
हे भारत के भारत वासी, है मेरी एक विनती तुमसे,
मनन करो गीता कुरान और बाइबिल का,
नहीं है बाते कही मंदिर मस्जिद और चर्चो जैसे,
है बस वर्णन अच्छे कर्मों के अच्छे फल जैसे,
हे भारत के भारत वासी, है मेरी ये विनती तुमसे,
हे भारत के भारत वासी, है मेरी ये विनती तुमसे,

हिन्दी भाषा का महत्व –महापुरुषों के जुबानों से ....

हिंदी भाषा को राष्ट्र भाषा बनाने के लिए और इसकी महत्ता को बताने के लिए भारत के नेताओं और साहित्यकारों ने इसके बारे में काफी कुछ लिखा है। पढ़ें उनमें से कुछ.....

अखिला आनंद

महात्मा गांधी:- राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है:राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है: 'हिंदी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है':

कमलापति त्रिपाठी:- हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है:

आचार्य विनोबा भावे:-मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूं पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता:

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक:- 'यद्यपि मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है':

डॉ. राजेंद्र प्रसाद:- जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य का गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता

सी. राजगोपालाचारी:- हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, यही जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगी:

राहुल सांकृत्यायन:- हमारी नागरी लिपी दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपी है:

सुभाषचंद्र बोस:-प्रान्तीय ईर्ष्या–द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती:

सुमित्रानंदन पंत:-हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोता है:

विलियम केरी:-हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है:

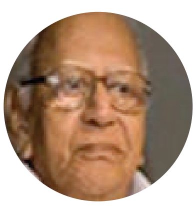

जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर:-सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपी आवश्यक है तो वो देवनागरी ही हो सकती है:

जॉर्ज ग्रियर्सन:- हिंदी आम बोलचाल की 'महाभाषा' है:

2018 मार्च से 2019 मार्च तक – समाचार और कार्यक्रम

राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह। डॉ. मीना. टी. पिल्लई, निदेशक,सेंटर फॉर कल्चरल स्टडीस, केरल विश्व विद्यालय मुख्य अथिति थीं।

रा पृ वि अ कें की 7 वीं अनुसंधान सलाहकार परिषद (आरएसी) बैठक और प्रोफेसर (डॉ) एस के टंडन की अध्यक्षता में पुनर्गठित आरएसी की पहली बैठक 9 वीं और 10 मार्च 2018 को राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र में आयोजित की गई।

12 मार्च 2018 को राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र में हिंदी कार्यशाला आयोजित किया गया। श्रीमती वी. एस. कोमलकुमारी, हिन्दी अधिकारी, वीएसएससी संकाय थीं।

"आर्ट ऑफ़ लिविंग - सरकारी कार्यकारी योगा कार्यक्रम" निरूप के वासुदेवन (संकाय-डीएसएन और सहज कार्यक्रम, आर्ट ऑफ लिविंग) और श्रीमती कविता निरूप (संकाय-कॉरपोरेट कार्यक्रम, आर्ट ऑफ लिविंग) के द्वारा 19-23 मार्च 2018 के दौरान रा पृ वि अ कें परिसर में आयोजित किया गया।

राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र ने 23 अप्रैल 2018 को पद्म भूषण डॉ. बी एन सुरेश, अध्यक्ष, इंडियन नेशनल एकेडमी ऑफ इंजीनियरिंग, नई दिल्ली, चांसलर, भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, त्रिवेंद्रम, और माननीय विशिष्ट प्रोफेसर, इसरो मुख्यालय, बैंगलोर द्वारा दिए गए स्थापना दिवस व्याख्यान का आयोजन करके अपना स्थापना दिवस मनाया।

04-06-2018 को रा पृ वि अ कें पर हिंदी कार्यशाला के अवसर पर एनसेस हिन्दी पत्रिका "पृथ्वी" का विमोचन। श्री. एम.जी. सोम शेखरन नायर, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, विक्रम साराभाई स्पेस सेंटर (वीएसएससी) अतिथि संकाय थे।

राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र में 21 जून 2018 को योग दिवस 2018 के अंतर्राष्ट्रीय दिवस के उत्सव के हिस्से के रूप में सभी कर्मचारियों के लिए एक योग प्रशिक्षण। योग प्रशिक्षण सत्र श्रीमती कविता निरूप, द आर्ट ऑफ लिविंग के वरिष्ठ संकाय, तिरुवनंतपुरम के द्वारा किया गया था।

भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के सचिव डॉ एम. राजीवन आभासी कक्षा का उद्घाटन करते हुए। डॉ.एन.पूर्णचन्द्र राव, निदेशक, डॉ. बंसल, डॉ. टी.एन.प्रकाश, और डॉ. डी. एस. सुरेश बाबू इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

स्वच्छता पखवाडा 2018, परिसर की सफाई का कार्यक्रम एनसेस में डॉ. एन. पूर्णचन्द्र राव के नेतृत्व मे करते हुए।

डॉ. एन. पूर्णचन्द्र राव, निदेशक, एनसेस स्वतंत्रता दिवस 2018 समारोह में ध्वज आरोहण करते हुए।

राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र कर्मचारी सदस्य का बाढ़ पीड़ितों के लिए मदद।

डॉ. जे. सी. जोशी, निदेशक (आईएफ़एस), केरला राज्य जैव विविधता बोर्ड, हिन्दी पखवाड़ा-2018 का उद्घाटन करते हुए। डॉ.एन. पूर्णचन्द्र राव, निदेशक, एनसेस और श्रीमती लावण्या, हिन्दी कार्यान्वयन अधिकारी मंच पर उपस्थित थे।

एनसेस हिन्दी पखवाड़ा -2018 का समापन समारोह 17/09/2018 केरल विधान सभा के विपक्ष के नेता श्री रमेश चेन्नित्तला द्वारा किया गया। डॉ. एन. पूर्णचन्द्र राव, निदेशक, एनसेस और मुख्य प्रबन्धक(प्रभारी) डॉ. डी. एस. सुरेश बाबू मंच पर उपस्थित थे।

स्वच्छता ही सेवा 2018 अभियान के हिस्से के रूप में राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र (एनसेस) ने सरकारी यूपी स्कूल, चेरुविकल में शौचालयों की सफाई सहित विभिन्न रखरखाव और नवीनीकरण गतिविधियों का आयोजन किया। डॉ. एन पूर्णचंद्र राव, निदेशक, एनसेस ने सरकारी यूपी स्कूल, चेरुविक्कल, तिरुवनंतपुम में 26-09-2018 को सफाई गतिविधियों का उद्घाटन किया।

दुर्गा पूजा समारोह

उन्नत केन्द्रीय रासायनिक प्रयोगशाला का उद्घाटन 24 अक्टूबर 2018 को भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के माननीय सचिव डॉ. एम. राजीवन ने किया था।

एनसेस कर्मचारियों ने 29 अक्टूबर से 3 नवंबर, 2018 तक मनाए गए सतर्कता जागरूकता सप्ताह के हिस्से के रूप में अखंडता प्रतिज्ञा ली।

26.12.2018 को राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र पर त्रैमासिक हिंदी कार्यशाला श्रीमती वी एस राजश्री, हिन्दी अनुवादक द्वारा आयोजित की गयी।

डॉ.एन. पूर्णचन्द्र राव, निदेशक राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र में नववर्ष समारोह का उद्घाटन करते हुए।

राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र ने 2-01-2019 को सभी कर्मचारियों के लिए एक योग क्लास का आयोजन किया है। श्रीमती कविता निरूप, संकाय-कॉर्पोरेट कार्यक्रम, आर्ट ऑफ़ लिविंग, तिरुवनंतपुरम द्वारा योग प्रशिक्षण सत्र किया गया।

विश्व हिंदी दिवस समारोह

डॉ. बी.के.बंसल, वैज्ञानिक-जी और सलाहकार, कार्यक्रम अधिकारी, ईएसएसओ-एनसीईएसएस, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार ने राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र में विश्व हिंदी दिवस का उद्घाटन करते हुए। डॉ. एन. पूर्णचन्द्र राव,निदेशक,एनसेस और श्री. डी.पी.मारेट, वरिष्ठ प्रबन्धक, एनसेस प्रस्तुत समारोह में उपस्थित थे।

25 जनवरी 2019 को राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र में राष्ट्रीय मतदाता दिवस प्रतिज्ञा।

एनसीईएसएस के निदेशक डॉ. एन. पूर्णचंद्र राव राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र में 70 वें गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर ध्वज आरोहण करते हुए।

एनसेस की आंतरिक शिकायत समिति (एनसीईएसएस-आईसीसी) द्वारा 15-02-2019 को "कार्यस्थल पर महिलाओं के लैंगिक उत्पीड़न का निवारण " (पोश) पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया है। डॉ. अनीता एस, सहायक प्रोफेसर, लोयोला कॉलेज ऑफ सोशल साइंसेस, तिरुवनंतपुरम और बाहरी सदस्य, एनसीईएसएस-आईसीसी ने "पोश " विषय पर अपनी वार्ता दी।

28 फरवरी 2019 को राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया गया।अंतरिक्ष भौतिकी प्रयोगशाला की निदेशक डॉ. राधिका रामचंद्रन ने इस अवसर पर "डॉ. सी. वी. रामन: व्यक्ति और वैज्ञानिक" पर व्याख्यान दिया।

बुधवार, 6 मार्च 2019 को "राजभाषा नियमों की जानकारी" के बारे में एनसीईएसएस में कार्यशाला आयोजित की गई है। कार्यशाला का संचालन श्री. प्रमोद कुमार शर्मा, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, राजभाषा विभाग, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार ने किया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस समारोह 08 मार्च 2019 को राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र में आयोजित किया गया। डॉ. जे. लता, पूर्व निदेशक, तकनीकी शिक्षा, केरल एवं कुलपति, कुसैट मुख्य अथिति थीं।

वी एस राजश्री

काश.........

चले गए वो सुनहरे दिन, चली गयीं वो शांत रातें
चारों ओर सिर्फ फ़ेसबुक,व्हाट्स आप्प और मेस्सेंजर
कहाँ जा रही है आजकल की पीढ़ी
दोष नहीं दे सकते उन्हें भी
ऑनलाइन के बिना अब कुछ भी नहीं संभव
दाखिला चाहिए तो सिर्फ़ ऑनलाइन
परिणाम चाहिए तो भी ऑनलाइन
आगे पढ़ना है फिर आया ऑनलाइन
खाने को.... जाने को.... पीने को.... ऑनलाइन ही ऑनलाइन
आईफ़ोन और स्मार्टफोन चाहिए लोगों को
ज़िंदगी को आगे ले जाने के लिए
न चाहिए प्रकृति की सुंदरता
न चाहिए माँ-बाप का साथ-सहारा
न चाहिए अपनों की उपस्थिति
कहाँ ले जाएगी ये परिस्थिति
काश....... वापस आती पुरानी स्थिति ॥

धरा का प्रकोप !

धन्या मोहन एस

कलियुग में अपराध का
बढा अब इतना प्रकोप
आज फिर से काँप उठी
देखो धरती माता की कोख!!

समय समय पर प्रकृति
देती रही कोई न कोई चोट
लालच में इतना अंधा हुआ
मानव को नही रहा कोई खौफ !!

कही बाढ, कही पर सूखा
कभी महामारी का प्रकोप
यदा कदा धरती हिलती
फिर भूकम्प से मरते बे मौत !!

मंदिर मस्जिद और गुरूद्वारे
चढ गए भेंट राजनीति के लोभ
वन सम्पदा, नदी,पहाड, झरने
इनको मिटा रहा इंसान हर रोज़ !!

सबको अपनी चाह लगी है
नहीं रहा प्रकृति का अब शौक
"धर्म" करे जब बातें जनमानस की
दुनिया वालो को लगता है 'जोक' !!

कलियुग में अपराध का
बढा अब इतना प्रकोप
आज फिर से काँप उठी
देखो धरती माता की कोख !!

एनसीईएसएस पृथ्वी विज्ञान मंच

डॉ.तंबान मेलोत, वैज्ञानिक एफ़ एवं ग्रुप डायरेक्टर (पोलर साइंसेज), राष्ट्रीय अंटार्कटिक एवं समुद्री अनुसंधान केंद्र (एनसीएओआर), गोवा ने राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र में "क्रायोस्फीयर -अतीत, वर्तमान और भविष्य" पर एक व्याख्यान दिया।

आईआईटीइं दौर के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. नीलिमा सत्यम ने "चिबो पाश्यार, कालीम्पोंग, पश्चिमबंगाल में सक्रिय स्लाइड की भूस्खलन भविष्यवाणी और निगरानी" पर एक व्याख्यान दी।

सुश्री मित्रा क्रिस्टिन हजाती, पीएच.डी. विद्वान, लिबनिज़ सेंटर फॉर ट्रोपिकलमराइन रिसेर्च (जेडएमटी), जर्मनी में सबमरीन भूजल निर्वहन पर कार्य समूह ने "ताजा सबमराइन भूजल निर्वहन (एफएसजीडी) मॉडलके लिए एक नया दृष्टिकोण" पर अपना काम प्रस्तुत किया।

भूगर्भ विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं प्रमुख डॉ. एल.इलंगो, अन्ना विश्वविद्यालय ने युवाओं के लिए एनसीईएसएस बेसिक जिओसायंसेस व्याख्यान श्रृंखला के हिस्से के रूप में युवा

पोंडिचेरी विश्वविद्यालय के पृथ्वी विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एस बालकृष्णन, ने युवाशोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों के लिए एनसेस बेसिक जियोसायनसेस व्याख्यान श्रृंखला के हिस्से के रूप में "आइसोटोप भूविज्ञान और इसके अनुप्रयोगों के सिद्धांत" विषय पर एक व्याख्यान दिया।

प्रोफेसर गोपाल कृष्ण पांडा, उत्कल विश्वविद्यालय ने युवा शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों के लिएएनसेस बेसिक जियोसायनसेस व्याख्यान श्रृंखला के हिस्से के रूप में "मैपबेसिक्स एंड कार्टोग्राफी" और "जियोमोर्फोलॉजी का परिचय" विषय पर एक व्याख्यान दिया।

प्रोफेसर संतोष कुमार, कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल ने युवा शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों के लिएएनसेस बेसिक जियोसायनसेस व्याख्यान श्रृंखला के हिस्से के रूप में "भू-रसायन विज्ञान के सिद्धांतों और भू-रासायनिक डेटा का उपयोग" विषय पर व्याख्यान दिया।

राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र के निदेशक, डॉ एन. पूर्णचंद्र राव ने युवाशोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों के लिए एनसेस बेसिक जियोसायनसेस व्याख्यान श्रृंखला के हिस्से के रूप में "भूकंप का परिचय" विषय पर एक व्याख्यान दिया।

डॉ.वी.सुंदर, महासागर इंजीनियरिंग विभाग के प्रोफेसर, आईआईटी मद्रास ने युवाशोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों के लिए रा पृ वि अ केंबेसिक जियोसायनसेस व्याख्यान श्रृंखला के हिस्से के रूप में "वेव मैकेनिक्स और तटीय प्रक्रियाएँ" विषय पर एक व्याख्यान दिया।।

वायुमंडलीय विज्ञान विभाग के प्रोफेसर मोहन कुमार, कुसाट ने युवा शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों के लिए रा पृ वि अ कें बेसिक जियोसयन्स व्याख्यान श्रृंखला के हिस्से के रूप में "वायुमंडलीय प्रक्रियाएं और गतिशील मौसम विज्ञान का परिचय" विषय पर एक व्याख्यान दिया।

भूगर्भविज्ञान और भूभौतिकी विज्ञान विभाग के प्रमुख प्रोफेसर अनिंद्या सरकार, आईआईटी खरगपुर ने आज युवा शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों के लिए रा पृ वि अ के बेसिक जियोसयन्स व्याख्यान श्रृंखला के हिस्से के रूप में "स्थिर आइसोटोप भू-रसायन विज्ञान कापरिचय" विषय पर एक व्याख्यान दिया।

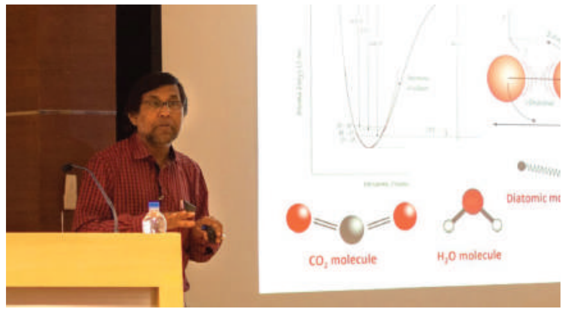

डॉ.ईश्वर राजशेखर, सहायक प्रोफेसर, आईआईटी बॉम्बे ने युवा शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों के लिए रा पृ वि अ के बेसिक जियोसयन्स व्याख्यान श्रृंखला के हिस्से के रूप में "थर्मल रिमोट सेंसिंग और इसके जल वैज्ञानिक अनुप्रयोग" के विषय पर एक व्याख्यान दिया।

प्रोफेसर के. विजय कुमार (एसआरटीएम यूनिवर्सिटी) ने युवा शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों के लिए रा पृ वि अ के बेसिक जियोसयन्स व्याख्यान श्रृंखला के हिस्से के रूप में "आग्नेय शैलविज्ञान का परिचय"के विषय पर एक व्याख्यान दिया।

डॉ कुसुमिता अरोरा, प्रिंसिपल वैज्ञानिक एवं चुंबकीय वेधशाला के प्रमुख, सीएसआईआर-एनजीआरआई, हैदराबाद ने एर्थ साइंस फोरम (ईएसएफ) में "भूमध्यरेखीय क्षेत्रमें भू-चुम्बकत्व " के विषय पर एक व्यख्यान दिया।

प्रोफेसर टी. आर. के. चेट्टी, सीएसआईआर-नेशनल जियोफिजिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट (विज़िटिंग फेलो, हैदराबाद विश्वविद्यालय) ने "(1) शीयर क्षेत्र (2) सिवनीक्षेत्र (3) दक्षिणी ग्रानूलाइट टेराईन और (4) पूर्वी घाट मोबाइल बेल्ट" आदि विषयों पर युवा शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों के लिए एनसेस बेसिक जियोसायन्स व्याख्यान श्रृंखला के हिस्से के रूप में व्याख्यान दिया।

प्रोफेसर विनोद कुमार गौर, माननीय एमरिटस वैज्ञानिक, सीएसआईआर-सेंटर फॉर मैथमैटिकलमॉडलिंग और कंप्यूटर सिमुलेशन (सी-एमएमएसीएस), बैंगलोर ने "जलप्रलय के बाद: ज्ञान निर्देशित लचीलापन की ओर" विषय पर एक व्याख्यान दिया।

डॉ. टिल ओहलर (पोस्ट डॉक, डब्ल्यूजी सबमरीन ग्राउंडवॉटर डिस्चार्ज, उष्णकटिबंधीय समुद्री अनुसंधान (जेडएमटी), ब्रेमेन, डचलैंड के लिए लीबनिज़सेंटर) ने एर्थ सायन्स फ़ोरम (ईएसएफ) पर "वर्कलासबटेरियन एस्ट्री में जांच" विषय पर एक व्याख्यान दी।

भारत में भूस्खलन के खतरों पर मास्टरमाइंड सत्र का आयोजन।

प्रो.पी. एन. विनयचंद्रन, सेंटर फॉर एटमॉस्फेरिक एंड ओशनिक साइंसेस (सीएओएस), आईआईएससी बैंगलोर ने "नेशनल सेंटर फॉर अर्थ साइंस स्टडीजअर्थ साइंस फोरम (ईएसएफ़) के साथ" एक आकर्षक खाड़ी के साथ मुठभेड़ "विषय पर एक व्याख्यान दिया।

डॉ.नगेन्द्र नाथ, एमेरिटस साइंटिस्ट, एनआईओ, गोवा ने निम्नलिखित व्याख्यान श्रृंखला (1) जलीय रासायनिक परिप्रेक्ष्य ओशनिक सेडिमेशन (2) महासागरीय खनिज संसाधन युवा शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों के लिए एनसेस बेसिक जियोसाइंस लेक्चर सीरीज के हिस्से के रूप में दिये।

संगठन चार्ट

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
(पृ वि मं)

पृथ्वी प्रणाली विज्ञान संगठन
(पृ प्र वि सं)

शासी निकाय

राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र
(रा पृ वि अ कें)

शासी परिषद्

अनुसंधान सलाहकार समिति

निदेशक

वित्त समिति

प्रशासन	प्रयोगशालायें	अनुसंधान समूह
मुख्य प्रबंधक	पालियोमैग्नटिसम	भूपर्यटीय प्रक्रिया समूह
कार्मिक सामान्य प्रशासन	पेट्रॉलजी	(सी आर पी)
वित्त लेखा	एक्स आर एफ, एक्स आर डी एस ई एम-ई डी एस	तटीय प्रक्रिया समूह
क्रय	जियोफ्लूयिड अनुसंधान एन एफ जी आर ए	(सी ओ पी)
भण्डार	सेडिमेन्टॉलजि	वायुमंडलीय प्रक्रिया समूह
संपदा प्रशासन &अनुरक्षण	पार्टिकल आकार अनलैसर	(ए टी पी)
	एम ए पी ए एन	जलविज्ञान प्रक्रिया समूह
	केंद्रीय रासायनिक जी सी-एम एस	(एच वाई पी)
	केंद्रीय जियोमैटिक्स	
	भूकंप वेधशाला, पीची	

केंद्रीय लोक सूचना अधकिारी (सी पी आई ओ)	परियोजना प्रशिक्षण प्रलेखन (पी टी डी) तकनीकी एकक, वेब सूचना एकक प्रशिक्षण विस्तार, पुस्तकालय

राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र सेवा निवृत्तियाँ, नियुक्तियाँ, पदोन्नतियाँ
01.04.2018 – 31.05.2019

सेवा नविृत्तयिाँ

क्रमांक	नाम	पदनाम	तिथि
1	पद्मजकुमारी. के. वी	संयुक्त प्रबंधक	31.05.2018
2	हारूण रषीद. एम. ए. के	प्रबंधक	31.07.2018
3	शकुन्तला. सी	वैज्ञानिक अधिकारी ग्रेड III	30.11.2018
4	रमेश कुमार. एम	वैज्ञानिक अधिकारी ग्रेड - III	31.01.2019
5	हरिदास. आर	उप प्रबंधक	31.01.2019

नियुक्तियाँ

क्रमांक	नाम	पदनाम	तिथि
1	उण्णिकृष्णन. एस. आर	वैज्ञानिक सहायक ग्रेड - ए	13.06.2018
2	विनीता पी. वी	वैज्ञानिक सहायक ग्रेड - ए	13.06.2018
3	षिबू शशि	वैज्ञानिक सहायक ग्रेड - ए	13.06.2018
4	शिवप्रिया एस	वैज्ञानिक सहायक ग्रेड - ए	14.06.2018
5	आदर्श एम के	तकनीशियन ग्रेड - ए	14.06.2018
6	जिनिता माधवन	समन्वयक ग्रेड - III	20.06.2018
7	लक्ष्मी जी	वैज्ञानिक सहायक ग्रेड - ए	20.06.2018
8	लिन्सी सुधाकरन एम	वैज्ञानिक सहायक ग्रेड - ए	25.06.2018
9	कृष्णा झा	वैज्ञानिक सहायक ग्रेड - ए	04.07.2018
10	श्रीजित एन	वैज्ञानिक सहायक ग्रेड - ए	17.08.2018
11	डी. पी. मारेट	वरिष्ठ प्रबन्धक	01.01.2019

पदोन्नतियाँ

क्रमांक	नाम	पदोन्नत पद	तिथि
1	डॉ. नंदकुमार. वी	वैज्ञानिक जी	01.07.2018
2	डॉ. पद्मलाल . डी	वैज्ञानिक जी	01.07.2018
3	डॉ. कृष्णकुमार.ए	वैज्ञानिक डी	01.07.2018
4	डॉ. रेजी श्रीनिवास	वैज्ञानिक डी	01.07.2018
5	बड़िमेला उपेंन्द्र	वैज्ञानिक सी	01.01.2019
6	धर्मदास जश	वैज्ञानिक सी	01.01.2019
7	रजत कुमार शर्मा	वैज्ञानिक सी	01.01.2019

हिन्दी पखवाड़ा 2018-2019
प्रतियोगिताएं और पुरस्कार वितरण